3.2.1 *Number of papers published per teacher in the Journals notified on UGC website during the last five years* (5)

List of Documents

Sr. No.	Details	
	2018-19	
1	Bhagvan Morval ki Upnyasome Gandhi vadi Chintan	D.S.Patil
2	Bhagvandas Morval ke 'Kala Pahad'Upnayas Me Dalit Vimarsh	D.S.patil
3	Vaishvikaran Ke Pariprekshya me Hindi Bhasha	R.M.Kharde
4	Dohara Abhishap Atmkatha me Abhivyakt Dalit Stree Vimarsh	R,M.Kharde

R-NAAC Accrediated

Principal
A.D.P.M's Women's College of
Art's, Com. & Home Sci. Jalgao

3.3.4
DSP (18-19)

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

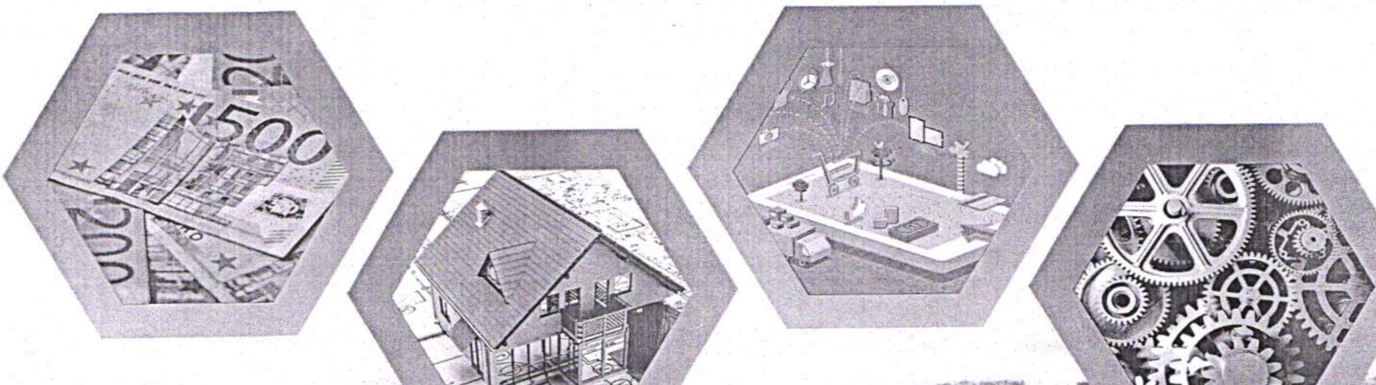

Volume-VII, Issue-III
July - September - 2018
English Part - II / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Principal,
K.D.P.M's Women's College of
Arts, Com. & Home Sci., Jalgaon

R-NAAC Accredited

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

Sr. No.	Name & Author Name	Page No.
१	ब्रिटिश भारतीय शिक्षा प्रणाली और भारतीय स्वतंत्रता में इसकी भूमिका **विरेंद्र कुमार**	१-४
२	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शुरविरों सिपाहियों की भूमिका **डॉ. यशवंत मेश्राम**	५-८
३	हिंदी पत्रकारिता और भारतीय स्वातंत्र्यता **डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे**	९-१२
४	स्वतन्त्रता के सदर्भ में लोकधाराई परीपेक्ष **प्रो. दिनेश कुमार**	१३-१५
५	देशभक्ती गीत एवं स्वतंत्रता संग्राम **प्रा. डॉ. सोपान सिताबराव वतारे**	१६-१८
६	एल. पी. जी. निती एवं भारतीय स्वतंत्रता इतिहास के परिप्रेक्ष्य में एवं आज : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्री. चंद्रशेखर लक्ष्मणराव कोरे**	१९-२४
७	महात्मा गांधीजी का असहकार आंदोलन **प्रा. डॉ. सुनील जी. नरांजे**	२५-२८
८	भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में गांधीवादी चिंतन **प्रा. डिंपल एस. पाटील**	२९-३१
९	आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर **प्रा. खराडे आर. एम.**	३२-३७

R-NAAC Accredited
COLLEGE OF ART'S, COM. & HOME SCI. JALGAON * WOMEN'S

Principal
A.D.P.M's Women's College of
Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon

3.3.4 DSP (2018-19)

I N T E R N A T I O N A L R E S E A R C H F E L L O W S A S S O C I A T I O N

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue - 114 (B)

हिंदी साहित्य के आधुनातन आयाम

अतिथी संपादक
डॉ. ए.आर. पाटील
प्रधानाचार्य
दादासो. दिगंबर शंकर पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
एरंडोल, जिला. जलगांव

विशेषांक संपादक :
प्रा. सौ. एस. व्ही. शेलार (हिंदी विभागाध्यक्ष)
डॉ. दीपक पाटील
दादासो. दिगंबर शंकर पाटील कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
एरंडोल, जिला. जलगांव

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज धनगर (येवला)

33

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

36	जगदीशचंद्र के उपन्यासों में नारी विमर्श	प्रा. दिलीप पाटील	140
37	हिंदी गद्य साहित्य के नव प्रवाह -नारी विमर्श	प्रा. वृषाली वडगे	143
38	'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में अभिव्यक्त दलित स्त्री विमर्श	प्रा. राजेश खार्डे	146
39	कैलाशचंद्र शर्मा के नाटकों में नारी विमर्श	प्रा. निंबा वाल्हे	149
40	मैत्रयी पुष्पा के 'अल्मा काबुतरी' उपन्यास में आदिवासी जनजीवन	डॉ. प्रल्हाद पावरा	153
41	हिंदी उपन्यास में आदिवासी विमर्श	प्रा. मच्छिंद्र ठाकरे	156
42	अनामिका की कहानियों में चित्रित आर्थिक विषमता	डॉ. मनोज पाटील	159
43	डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल की गाजलों में आर्थिक बोध	डॉ. दीपक पाटील	162
44	बंजारा जाति की लोकसंस्कृति : एक दृष्टिक्षेप	राजाराम तायडे	167
45	निरुपमा सेवती के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ. राहुल भदाणे	170
46	भीष्म साहनी की कहानियों में दिव्यांग संवेदना	डॉ. रोशनी पवार	173
47	भगवानदास मोरवाल के 'काला पहाड' उपन्यास में दलित विमर्श	प्रा. डिम्पल पाटील	176
48	'हलाला' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श	परेश सननसे, डॉ. संजयकुमार शर्मा	179
49	राजेंद्र मिश्र द्वारा लिखित 'इतिहास की आवाज' में चित्रित नारी विमर्श	दिनानाथ पाटील, डॉ. संजयकुमार शर्मा	182
50	२१ वी सदी में प्रथम दशक के प्रतिनिधिक उपन्यासों में स्त्री विमर्श	प्रा. सपना पाटील	186
51	मंजुल भगत कृत 'गंजी' उपन्यास में नारी चित्रण	रजनी इंगळे	189
52	'गदल' : निर्भीड स्त्री की गाथा	मुक्ति जैन	192
53	स्त्री विमर्श	भावना बडगुजर	196
54	समकालीन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श	डॉ. सुनिता कावळे	198

इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किए है । प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, उन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट ***(Originality of the papers)*** *की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।*

R-NAAC Accredited
Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा

प्रा. राजेश मेरसिंग खर्डे
कला, वाणिज्य व गृहविज्ञान
महिला महाविद्‌यालय, जलगाँव

प्रस्तावनाः

हिन्दी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा है। यह अपने आप में पुर्ण रुप से एक समर्थ और सक्षम भाषा है। सबसे बड़ी बात यह है, भाषा जैसे लिखी जाती है, वैसे ही बोली जाती है। दूसरी भाषाओं में कई अक्षर सायलेंट होते है और उनके उच्चारण भी लोग अलग–अलग करते है, लेकिन हिन्दी के साथ ऐसा नहीं होता। इसलिए हिन्दी को बहुत सरल भाषा कहा जाता है। हिन्दी कोई भी बहुत आसानी से सीख़ सकता है। हिन्दी अति उतार, समझ में आनेवाली सहिष्णु भाषा होने के साथ ही भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका भी है।

हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं, संस्कार भी है। यह संस्कार सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रिया से अर्जित होता है और जातीय अस्तित्व की पहचान बनाता है। हिन्दी का संस्कार कई शताब्दियों से होता रहा है और अपने उदारवादी स्वभाव के कारण वह भारत ही नहीं, भारत से बाहर विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाने लगी है। भारत की अन्य भाषाओं के साथ सतत संपर्क होने के कारण यह भाषा जातीय सभ्यता और संस्कृति का प्रबल आधार बन रही है। इसका अंतरभारती स्वरुप स्पष्ट झलकने लगा है। इसीलिए इसे भारत के संविधान में राजभाषा के पद से गौरवान्वित किया गया। वास्तव में भारत को राजनैतिक, भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से एक सुत्र में बांधने वाली हिन्दी ने समुचे भारत में अपना राष्ट्रीय गौरव प्राप्त कर लिया है। इसी के साथ–साथ उसने विश्व के लगभग सभी देशों में अपनी पताका भी फहरा दी है। भूमंण्डलीकरण अथवा वैश्वीकरण के युग में यह महत्वपुर्ण भुमिका निभा रही है और इसका स्थान विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली तीन भाषाओं – हिन्दी, चीनी और अंग्रेजी के अंतर्गत आता है। वैश्वीकरण या ग्लोबलायजेशन, बाजारों की तीव्रता के माध्यम से पुरे विश्वभर में व्यवसाय और तकनीक की उपलब्धता का निर्माण करता है। ग्लोबलाइजेशन ने इस पुरे विश्व में बहुत से परिवर्तन किए है, जहाँ लोग अपने देश से दुसरे देशों में अच्छे अवसरों की तलाश में जा रहे है। व्यापार या व्यवसाय के वैश्वीकरण रणनीति में बदलाव लाने की आवश्यकता होती है। उन्हें अपनी व्यापारिक रणनीति को एक देश को ध्यान में न रखते हुए इस तरह का बनाना होता है, जिससे कि वे बहुत से देशों में काम करने में सक्षम हो।

हिन्दी एक उदार विश्व मन की भाषा है। हिन्दी में सिर्फ भारत नहीं पुरा विश्व झलकता है। एक जीवित भाषा का लक्षण है कि वह पुरे विश्व में बसती है और उसमें एक पुरा विश्व बसता है। निसंदेह हिन्दी पर बहुराष्ट्रीय कंपनीयों द्‌वारा निर्मित एक ऐसी कृत्रिम उपभोक्तावादी संस्कृति का दबाव है, जो इंसान को भीतर से एकायामी और छिछला बनाती है। हिन्दी में अंग्रेजी की घुसपैठ दुसरी किसी भी भाषा से ज्यादा है। हिन्दी उप–संस्कृतियों का आधार भी है, तो हिन्दी की विविधता चिन्ह है।

हिन्दी के साहित्यिक और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति का एक नया आयाम उसके वैश्विक और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ से जुड़ता है। विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी के माध्यम से कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि सर्जनात्मक साहित्य के साथ–साथ ज्ञानात्मक साहित्य का प्रणयन प्रचुर मात्रा में हो रहा है। अतः आज यह आवश्यक हो गया है कि इन देशों में रचित हिन्दी साहित्य की इतिहास लेखन और

Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's. Com. & Home Sci. Jalgaon
COLLEGE OF ART'S, COM. & HOME SCI. JALGAON R-NAAC Accrediated

आलोचनात्मक मुल्यांकन में स्थान दिया जाए तभी हिन्दी साहित्य सही अर्थो में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का रुप ले पाएगा।

भारत से बाहर विदेश में हिन्दी भाषी भारतीय काफी संख्या में बसे हुए है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे देश भी है, जिनमें हिन्दी भाषा किसी जन समुदाय या वर्ग की भाषा नहीं है, किन्तु विभिन्न स्थितियों में यह संपर्क या वर्ग की भाषा के रुप में प्रयुक्त होती है।

वैश्वीक स्तर पर हिन्दी भाषा:

भारतीय मुल के लोग वर्षो पहले मॉरिशस, फीजी, टोबेगो एवं त्रिनिदाद, गुयाना, सुरीनाम, दक्षिण अफ्रिका आदि गए थे और वही बस गए। यह लोग दो–ढाई सौ वर्ष पहले भारतीय खेतिहर मजदुर के रुप में गए और अपनी अस्मिता को बनाए रखने के लिए उन्होंने हिन्दी भाषा के प्रयोग को जीवित रखा।

हिन्द महासागर में स्थित मॉरिशस देश लघु भारत के रुप में जाना जाता है। इस देश में दिसंबर 1834 में सबसे ज्यादा गिरमिटिया मजदुर पहुँचे थे। वे लोग मुख्य रुप से पुर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिम बिहार में आये थे, जिनकी मातृभाषा भोजपूरी थी। इसी कारण मॉरिशस में भोजपुरी हिन्दी का प्रयोग होता रहा है और उसी के साथ मानक हिन्दी का भी विकास हुआ। इन लोगों ने अपनी धार्मिक भावना, अपनी सांस्कृतिक विरासत, रीति–रिवाज आदि को वहीं बनाए रखा। प्रारंभ में उन्होंने बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था स्वयं की। आज वहाँ महात्मा गांधी इंन्स्टीट्युट में स्नातकोत्तर तक हिन्दी की पढ़ाई होती है।

मॉरिशसवासी भारतवंशी अभिमन्यू अनंत के शब्दों में, "मॉरिशस की हिन्दी अपनी माटी की सौंधी खुशबू की गंध को आंत्मसात करके ही अपना एक नीजी स्थान बना सकी है और हिन्दी के शब्द सरोवर में अपने हिस्से की चंद बुँदे जोर पाहे है।"[1]

आधुनिक काल में अभिमन्यू अनंत ने साहित्य के क्षेत्र में काफी कार्य किया है। हिन्दी जगत में उन्हे श्रद्धा और सम्मान के साथ देखा जा रहा है। उन्होंने 32 उपन्यास, 7 कहानी संग्रज, 5 नाटक, 4 कविता संग्रह, 3 जीवनी आदि अनेक विधाओं में रचनाए लिखी है। इस विधाओं में मॉरिशस के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि विभिन्न संदर्भो में व्यापक चित्रण मिलता है। उनके कविता संग्रह 'कैक्टस के दांत' में मजदुरों की विपन्नता तथा उनके शोषण और सामाजिक विषमताओं का मार्मिक चित्रण किया गया है। इनकी एक कविता का एक उदाहरण हैं :

"बड़ी कृतज्ञ मजदुर जाति
जो चिल्ला–चिल्ला कर कह रही
कि तुमसे उसे कुछ भी नहीं मिला
लेकिन मैं तो तुम्हारा आभारी हूँ
जानता हुँ कि मेरे फटेहाल झोली का
यह खालीपन तुम्हारी ही देन है।"[2]

इस प्रकार भारतेत्तर देशों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप को विस्तार प्रदान करने में प्रवासी साहित्यकारों ने सेतु का काम किया है।

भारत के प्रवासी साहित्य के बाद सबसे बड़ी संख्या ईसाई मिशनरियों की रही है जो यहाँ अपने धर्म प्रचार के लिए आते थे। अन्य भारतीय भाषओं के साथ हिन्दी की जानकारी इनके लिए भी अनिवार्य थी। अनेक

NAAC Accredited
Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon

मिशनरीयों ने हिन्दी सीखी।

मीडिया और वेब पर हिन्दीः

आज विश्व में सबसे ज्यादा पढ़े जानेवाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी के है। इसका आशय यह है कि पढ़ा–लिखा वर्ग भी हिन्दी के महत्व को समझ रहा है। मीडिया में हिन्दी का जबरदस्त प्रयोग विश्वस्तर पर हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में सक्षम हुआ है। विदेशी कंपनियों ने अपने विज्ञापन अंग्रेजी से अधिक हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उजागर कर रही है। खुला बाजारवाद हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अत्यंत महत्वपुर्ण भुमिका निभा रहा है। 2010 के बाद हिन्दी के विश्वस्तरीय विकास को देखकर स्तर चैनल के मुखियॉ सपई मोटर के अपने मार्डोक को अपने स्टार कार्यक्रमों का टीआरपी बढ़ाने के लिए हिन्दी का सहारा लेना पड़ा। इसी तरह हिन्दी का प्रचार–प्रसार विश्वस्तर पर जिस तेज़ी के साथ बढ़ा है उसमें अन्य भाषाएँ पीछे छुट गई है। इस प्रकार हिन्दी का वर्चस्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हिन्दी अब बालीवुड से चलकर हालीवुड पहुँच गई है। अमरीका जैसे संपन्न और विकसित देश में हिन्दी का वर्चस्व बढ़ा है। अमरिका ही नहीं, दुनिया के अन्य देशों में भी हिन्दी फिल्में, टी.वी. सीरियल लोगों के बीच मनोरंजन के मुख्य स्त्रोत बन गए है।

हिन्दी का चरित्र और अंतरराष्ट्रीय विस्तार :

आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि विश्व की एक बड़ी भाषा है। हिन्दी का अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सांस्कृतिक संपर्क का लंबा इतिहास रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ कई देशों में हिन्दी सुचना एवं संवाद–व्यापार की प्रमुख शक्ति के रुप में पहचानी जा रही है तो वहीं अनेक देशों में इस भाषा के प्रति भाषिक–सांस्कृतिक कारणों से गहरी रुचि है। पक्ष–विपक्ष और तर्क वितर्को के बावजूद हिन्दी भारत की पहचान है। देश और दुनिया भर में हिन्दी का महत्व कई कारणों से है जिनका सारांश यह है कि, 'हिन्दी आधुनिक भारत को जानने और इससे जुड़ने का मुख्य द्वार है। यह भारतीय लोकतांत्रिक गणराज्य की अभिव्यक्ती का जनपथ भी है और राजपथ भी है।

हिन्दी के चरित्र से जुड़ी एक बड़ी विशेषता है, लोकतंत्र और मानव अधिकारों के प्रति इसकी मौलिक आस्था। और इसका यह गुण दुनिया को इस भाषा के प्रति आश्वस्त करता है। हिन्दी अपनी प्रकृति और संस्कृति दोनों तर से विस्तारशील होकर भी विस्तारवादी नहीं हैं। यह भाषा हमेशा अन्य भाषाओं के साथ समभाव–सहभाव और समन्वयपुर्ण समावेश की पक्षधर रही है। इस कारण सबने इसे खुले मन के साथ अपनाया है और इसी वजह से हिन्दी भाषा को आंतर्राष्ट्रीय भुमिका का निरंतर विस्तार हो रहा है। सारांश के रुप में कहा जाए तो हिन्दी अपने गौरवशाली अतीत और विकासशील वर्तमान के साथ विश्व के भविष्य और भविष्य के विश्व की भाषा है।

भाषा के वैश्विक संदर्भ की विशेषताएँ :

हिन्दी को विश्व भाषा में रुपांतरित होते हुए हम देख रहें है और यथावर उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे है, तब यह जरुरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा की विशेषताओं का विश्लेषण कर ले।

1) उसके बोलने, जानने, लिखने और चाहनेवाले लोग विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हो।
2) वह जनसंचार माध्यमों में बडे पैमाने पर देश–विदेश में प्रमुख हो रही हो।
3) वह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक संदर्भो, सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक चिंताओं तथा आर्थिक विनिमय की संवाहक थे।
4) उस भाषा में साहित्य–सृजन की प्रदीर्घ परंपरा है और प्रायः सभी विधाए वैविध्यपुर्ण एवं समृद्ध हो।

Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon
College of Art's, Com. & Home Sci. R-NAAC Accredited

5) उसकी शब्दी एवं आर्थी संरचना तथा लिपि सरल, सुबोध एवं वैज्ञानिक हो। उसमें निरंतर परिष्कार और परिवर्तन की गुंजाईश हो।
6) उसकी शब्द–सम्पदा विपुल एवं विराट है तथा वह विश्व को अन्य बड़ी भाषाओं से विचार–विनिमय करते हुए एक–दूसरे को प्रेरित प्रभावित करने में सक्षम हो।
7) वह नवीनतम वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपलब्धीयों के साथ अपने आपको दुरुस्कृत एवं समायोजित करने की क्षमता हो।
8) उसका साहित्य अनुवाद के माध्यम से विश्व को दूसरी महत्वपुर्ण भाषाओं में पहुच रहा हो।
9) उस भाषा के साहित्य–सृजन की प्रदीर्घ परम्परा है और प्रायः सभी विधाएँ वैविध्यपुर्ण एवं समृद्ध हैं। उस भाषा में सृजित कम–से–कम एक विधा का साहित्य विश्व स्तरीय हो।
10) वह विश्व चेतना की संवाहिका है। वह स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टिसम्पन्न कृतिकारों की भाषा है, जो विश्व स्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग जानते हो।

हिन्दी भाषा पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान, श्रीलंका आदि पडोसी देश एक ही भाषा परिवार की भाषाए बोलने वालों के देश है। इन देशों में इस कारण हिन्दी भाषा से परिचय अधिक स्वाभाविक रुप से दिखाई देता है। पाकिस्तान की राजभाषा उर्दू है, इस कारण पाकिस्तान के लोगों को हिन्दी समझने–बोलने में अधिक कठिनाई नहीं होती। नेपाली और हिन्दी का अत्यंत निकट संबंध है। नेपाली भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इस समाज तत्त्वों के कारण नेपाली भाषा के लिए हिन्दी भाषा अधिक संप्रेषणीय लगती है। रेडीयो, दूरदर्शन आदि संचार साधनों ने संप्रेषणीयता को और अधिक बढा दिया है। इसी प्रकार बांग्लादेश, अफगानिस्तान के लोगों के लिए हिन्दी सुगम और सहज लगती है और वहाँ के लोग हिन्दी फिल्मों और गीतों में रुचि लेते है। श्रीलंका की भाषा सिंहली एक आर्य भाषा है। इसकी लिपि ब्राह्मी लिपि से निकली है। अतः श्रीलंका में हिन्दी के प्रति रुचि अधिकाधिक बढ़ रही है।

निष्कर्ष :

विश्व के कई देशों में लाखो प्रवासी भारतीय रहते है, जो सामाजिक–सांस्कृतिक अस्मिता के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग करते है और इनमें से कुछ व्यक्ति उच्च स्तर पर हिन्दी में शिक्षा भी प्राप्त करते है। अनेक देशों के लोगों में हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ रही है और वे उसका उच्च अध्ययन या शोध कार्य करते है। आज विश्व में लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है। अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन आदि कई देशों में साहित्य सृजन के साथ–साथ साहित्यिक पत्रिकाएं मुद्रित और इंटरनेट पर उपलब्ध होने लगी हैं। इस दृष्टि से हिन्दी ने विश्व में अपनी पहचान बना ली है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ (यु.एन.ओ) में इसे अन्य छः भाषाओं के साथ स्थान दिलाने के प्रयास भी किये जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1) 'अभिमन्यु अनत – एक बातचित', कमल किशोर गोयनका, पृ.क्र 16
2) आजकल – मासिक पत्रिका, अगस्त 2018, पृ.क्र 13
3) भाषा – द्वि मासिक पत्रिका, जुलाई अगस्त 2016, पृ.क्र 42
4) समकालीन भारतीय साहित्य – द्विमासिक पत्रिका, जुलाई अगस्त 2018, पृ.क्र 15–20
5) भाषा – मासिक पत्रिका, जनवरी फरवरी 2018, पृ.क्र 59–64
6) आजकल, मासिक पत्रिका, अगस्त 2018, पृ.क्र 15

Principal
A.D.P.M's Women's College of Art's, Com. & Home Sci. Jalgaon